सूरह — एक कहानी

सूरह क़ाफ़

हर्फ़ क़ाफ़

पूरा सफ़र — शह-रग से भी क़रीब —

जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 50 • 45 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

क़ाफ़। वल्-क़ुरआनिल्-मजीद
1. क़ाफ़। बुज़ुर्ग क़ुरआन की क़सम।

व नह्नु अक़्रबु इलैहि मिन हब्लिल्-वरीद
16. और हम उस से उसकी शह-रग से भी ज़्यादा क़रीब हैं।

मा यल्फ़िज़ु मिन क़ौलिन इल्ला लदैहि रक़ीबुन 'अतीद
18. वो कोई लफ़्ज़ नहीं बोलता मगर उसके पास एक तैयार निगहबान मौजूद है।

व जा-अत सक्रतुल्-मौति बिल्-हक़्क़
19. और मौत की बेहोशी हक़ ले कर आ गई।

लक़द कुन्त फ़ी ग़फ़्लतिम्-मिन हाज़ा फ़-कशफ़्ना 'अन्क ग़िता-अक फ़-बसरुकल्-यौम हदीद
22. तू इस से ग़फ़लत में था, अब हमने तेरा पर्दा हटा दिया, तो आज तेरी निगाह तेज़ है।

लहुम मा यशा-ऊन फ़ीहा व लदैना मज़ीद
35. उन के लिए वहाँ जो चाहें है, और हमारे पास और भी ज़्यादा है।

एक हर्फ़, और क़ुरआन की क़सम

बेटा, ये सूरह एक वाहिद अरबी हर्फ़ से खुलती है: '**क़ाफ़**' — उन शुरुआत में से एक जिनका पूरा मतलब अल्लाह ने अपने पास रखा। और फ़ौरन उसके बाद: '**वल्-क़ुरआनिल्-मजीद** — **बुज़ुर्ग क़ुरआन** की क़सम।'

उलमा यहाँ एक ख़ूबसूरत बात ग़ौर करते हैं: **हर्फ़ ख़ुद एक चैलेंज है।** ये किताब उन्हीं हर्फ़ों से बनी है जो अरब हर रोज़ इस्तेमाल करते थे — क़ाफ़, साद, नून, अलिफ़ — और फिर भी वो इसके जैसा कुछ न बना सके। **कच्चा माल हर एक के हाथ में था; तरतीब अल्लाह की तरफ़ से थी।**

'मजीद' — बुज़ुर्ग, शरीफ़, भलाई में भरपूर। और बेटा, ये एक ऐसी सूरह थी जिसे नबी ﷺ पसंद करते थे। आप सूरह क़ाफ़ **ईद की नमाज़ों** में और **जुमे** में पढ़ा करते

थे, और एक सहाबिया ने कहा कि उसने इसे इतनी बार आप के मुँह से मिंबर पर सुना कि उसने आप से इसे **हिफ़्ज़** कर लिया।

ये सूरह, हफ़्ते-दर-हफ़्ते क्यों? क्योंकि, बेटा, ये उस वाहिद मौज़ू से निमटती है जिसे एक शख़्स कभी न भूले: **मौत, दोबारा ज़िंदा होना, और ये हक़ीक़त कि अल्लाह देख रहे हैं।** एक मुआशरा जो ये हर जुमा सुने वो दूर नहीं भटकता।

और सूरह उनका ए'तिराज़ नाम ले कर शुरू होती है: 'बल 'अजिबू अन जा-अहुम मुन्ज़िरुम्-मिन्हुम — बल्कि वो **हैरान** होते हैं कि उन्हीं में से एक डराने वाला आया — फ़-क़ालल्-काफ़िरून हाज़ा शै-उन 'अजीब — तो काफ़िर कहते हैं: ये एक अजीब बात है! **अ इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबा** — जब हम **मर** जाएँगे और **मिट्टी** हो जाएँगे? ज़ालिक रज्'उम्-ब'ईद — ये तो एक **दूर** की वापसी है!'

और अल्लाह एक ऐसी हक़ीक़त से जवाब देते हैं जो उन्होंने सोची न थी: '**क़द 'अलिम्ना मा तन्क़ुसुल्-अर्ज़ु मिन्हुम** — **हम जानते हैं जो ज़मीन उन में से कम करती है** — **व 'इंदना किताबुन हफ़ीज़** — और हमारे पास एक **महफ़ूज़ रिकॉर्ड** है।'

बेटा, वो बारीकी महसूस कीजिए: अल्लाह ठीक जानते हैं कि मिट्टी हर जिस्म में से क्या खाती है — कौन सा ज़र्रा कहाँ गया, सदियों के दौर में। **किसी चीज़ का हिसाब नहीं खोता।** दोबारा जोड़ना सिर्फ़ उस शख़्स के लिए 'दूर' है जो भूल गया **कौन** ये कर रहा है।

ऊपर देखो, नीचे देखो

फिर सूरह वो करती है जो वो सब से बेहतर करती है — ये आम दुनिया की तरफ़ इशारा करती है: '**अ फ़-लम यन्ज़ुरू इलस्-समा-इ फ़ौक़हुम कैफ़ बनैनाहा व ज़य्यन्नाहा** — क्या उन्होंने अपने ऊपर **आसमान** को नहीं **देखा** — हमने उसे कैसे **बनाया** और **सजाया** — **व मा लहा मिन फ़ुरूज** — और उस में कोई **दरार** नहीं?'

'वल्-अर्ज़ मदद्नाहा व अल्क़ैना फ़ीहा रवासिय — और **ज़मीन** — हमने उसे बिछाया और उस में **मज़बूत पहाड़** डाले — व अम्बत्ना फ़ीहा मिन कुल्लि ज़ौजिम्-बहीज — और उस में हर **ख़ूबसूरत** क़िस्म उगाई।'

बेटा, लफ़्ज़ ग़ौर कीजिए '**बहीज**' — दिलकश, देखने में भला। **अल्लाह ने सिर्फ़ पौदे ग़िज़ा-दार नहीं बनाए; उन्होंने उन्हें ख़ूबसूरत बनाया।** फल के रंग, पत्तों की शक्लें, एक फूल की ख़ुशबू — इन में से कोई ज़िंदा रहने के लिए ज़रूरी न था। **ये आपके लुत्फ़ के लिए दिया गया।**

'तब्सिरतंव्-व ज़िक्रा लि-कुल्लि 'अब्दिम्-मुनीब — एक **बसीरत** और एक **याद-दिहानी** हर उस बंदे के लिए जो (अल्लाह की तरफ़) **लौटता** है।'

बेटा, शर्त ग़ौर कीजिए — '**मुनीब**', वो जो लौटता है, जो रुजू करता है। **वही आसमान हर एक के ऊपर है, मगर सिर्फ़ लौटने वाला दिल उसे एक निशानी के तौर पर पढ़ता है।**

'व नज़्ज़ल्ना मिनस्-समा-इ मा-अम्-मुबारका — और हमने आसमान से **बा-बरकत** पानी उतारा — फ़-अम्बत्ना बिही जन्नातिंव्-व हब्बल्-हसीद — और उस से बाग़ और काटने वाला अनाज उगाया — वन्-नख़्ल बासिक़ातिल्-लहा तल्'उन नज़ीद — और ऊँचे **खजूर** के दरख़्त **तह-ब-तह गुच्छों** वाले — **रिज़्क़ल्-लिल्-'इबाद** — बंदों के लिए **रिज़्क़** के तौर पर — व अह्यैना बिही बल्दतम्-मैता — और हम उस से एक **मुर्दा ज़मीन** को ज़िंदा करते हैं। **कज़ालिकल्-ख़ुरूज** — **इसी तरह (क़ब्रों से) निकलना होगा।**'

बेटा, वो आख़िरी लाइन तीन लफ़्ज़ों में पूरी दलील है: '**कज़ालिकल्-ख़ुरूज**' — ठीक इसी तरह निकलना होगा। आपने अपनी ज़िंदगी में मुर्दा ज़मीन को दस हज़ार बार सब्ज़ होते देखा है। **आप इसे एक मौसम कहते हैं। अल्लाह इसे एक रिहर्सल कहते हैं।**

और फिर उन क़ौमों की फ़ेहरिस्त जिन्होंने झुठलाया — नूह की क़ौम, कुएँ वाले, समूद, 'आद, फ़िरऔन, लूत के भाई, झाड़ी वाले, तुब्बा' की क़ौम — 'कुल्लुन कज़्ज़बर्-

रुसुल फ़-हक़्क़ा व'ईद — उन सब ने रसूलों को झुठलाया, तो मेरी धमकी **सच साबित** हुई।'

'**अ फ़-'अयीना बिल्-ख़ल्क़िल्-अव्वल** — क्या हम **पहली तख़्लीक़** से **थक** गए? बल हुम फ़ी लब्सिम्-मिन ख़ल्क़िन जदीद — बल्कि, वो एक **नई** तख़्लीक़ के बारे में उलझन में हैं।' बेटा — क्या पहली तख़्लीक़ ने उन्हें थका दिया, कि दूसरी मुश्किल हो?

शह-रग से भी क़रीब

और अब, बेटा, हम उस आयत पर आते हैं जो इस सूरह को उसकी सब से मशहूर लाइन देती है — और ये पूरे क़ुरआन के सब से रोब-डाल बयानों में से एक है:

'**व लक़द ख़लक़्नल्-इंसान व न'लमु मा तुवस्विसु बिही नफ़्सुह** — और हमने **इंसान** को **बनाया**, और **हम जानते हैं जो उसका नफ़्स उसे सरगोशी करता है** — **व नह्नु अक़्रबु इलैहि मिन हब्लिल्-वरीद** — **और हम उस से उसकी शह-रग से भी ज़्यादा क़रीब हैं।**'

बेटा, इसे आहिस्ता खोल कर देखिए।

पहले: 'मा तुवस्विसु बिही नफ़्सुह' — जो उसका नफ़्स उसे **सरगोशी** करता है। वो नहीं जो वो **कहता** है। वो भी नहीं जो वो साफ़ **सोचता** है। **सरगोशी** — वो आधी बनी हुई सोच, वो तहरीक जो थरथरा कर गुज़र जाती है, वो चीज़ जो आप किसी को कभी न बताएँ क्योंकि आपने मुश्किल से ख़ुद को बताई।

अल्लाह वो जानते हैं।

और **दूसरा:** 'अक़्रबु इलैहि मिन हब्लिल्-वरीद' — शह-रग से भी क़रीब। बेटा, अल्लाह ने जिस्म के तमाम हिस्सों में से वो रग क्यों चुनी? क्योंकि **वो आपके अंदर है**, आप जिसे छू सकें उस हर चीज़ से क़रीब — आप उसे देख नहीं सकते, पहुँच नहीं सकते, महसूस नहीं कर सकते, और फिर भी आपकी ज़िंदगी उस में से हर सेकंड गुज़रती है। **ये क़ुर्बत की असली ता'रीफ़ है।**

और अल्लाह कहते हैं: **मैं उस से ज़्यादा क़रीब हूँ।**

बेटा, इस पर एक लम्हा ठहरिए, क्योंकि ये आपकी पूरी मज़हबी ज़िंदगी बदल सकती है। ज़्यादातर लोग अल्लाह से यूँ ताल्लुक़ रखते हैं जैसे वो **दूर** हों — वहाँ ऊपर, फ़ासले पर, आफ़त में चीख़ने के लिए। **ये आयत वो तस्वीर ढा देती है।** वो आपकी अपनी गर्दन की रग से ज़्यादा आपके क़रीब हैं। आपको आवाज़ की ज़रूरत नहीं। आपको कोई ख़ास जगह नहीं चाहिए। **आपको लफ़्ज़ों की भी ज़रूरत नहीं** — वो सरगोशी सुन लेते हैं उस से पहले कि आप उसे बनाना ख़त्म करें।

और ग़ौर कीजिए, बेटा, इस क़ुर्बत की **दो धार**। गुनहगार के लिए: **कोई तन्हाई नहीं, कभी, कहीं।** उस के लिए जो उनकी तड़प रखता है: **कोई फ़ासला नहीं, कभी, कहीं।** वही आयत एक तंबीह है और एक आग़ोश — इस पर मुनहसिर कि कौन सा दिल उसे पाता है।

दो फ़रिश्ते, और एक लफ़्ज़

'**इज़ यतलक़्क़ल्-मुतलक़्क़ियानि 'अनिल्-यमीनि व 'अनिश्-शिमालि क़'ईद** — जब दो **लेने वाले** लेते हैं, **दाएँ** और **बाएँ** पर **बैठे** हुए।'

बेटा, लफ़्ज़ ग़ौर कीजिए '**क़'ईद**' — **बैठे** हुए। वो गुज़र नहीं रहे; **वो तैनात हैं।** आपके साथ बैठे, अभी, एक हर तरफ़।

'**मा यल्फ़िज़ु मिन क़ौलिन इल्ला लदैहि रक़ीबुन 'अतीद** — वो कोई **लफ़्ज़** नहीं **बोलता** मगर उसके पास एक **निगहबान, तैयार** मौजूद है।'

बेटा, 'मा यल्फ़िज़ु मिन क़ौलिन' — **एक भी बात नहीं।** एक भी नहीं। वो मज़ाक़ नहीं, वो बुदबुदाई शिकायत नहीं, वो जुमला नहीं जो ट्रैफ़िक में कहा, वो बात नहीं जो आपने अपने साथी के बारे में कही और दोपहर तक भूल गए। **हर लफ़्ज़**, एक निगहबान के ज़रिए लिया जाता है जो "अतीद' है — तैयार, चौकन्ना, फ़र्ज़ पर।

और बेटा, इस आयत को उस से पहले वाली के साथ रखिए। अल्लाह आपकी **अन-कही सरगोशी** जानते हैं — और उन्होंने **साथ ही** दो फ़रिश्ते तैनात किए हैं

आपके **बोले हुए लफ़्ज़** लिखने के लिए। उन्हें उनकी ज़रूरत न थी; **रिकॉर्ड एक रहमत और एक सबूत है**, ताकि उस दिन बिना सबूत कुछ दावा न किया जाए।

अमली सबक़ अज़ीम है, बेटा। हम अपना पैसा, अपने दरवाज़े, अपनी साख़ की हिफ़ाज़त करते हैं — **और अपनी ज़ुबान को आज़ाद छोड़ देते हैं।** एक मोमिन जो वाक़ई इस आयत को जीता वो **बहुत कम और बहुत बेहतर** बोलता। जैसा नबी ﷺ ने फ़रमाया: जो अल्लाह और आख़िरी दिन पर ईमान रखता है वो अच्छी बात कहे या ख़ामोश रहे।

मौत की बेहोशी

और फिर, बेटा, सूरह उस मंज़र में दाख़िल होती है जिसमें हम सब हीरो होंगे: '**व जा-अत सक्रतुल्-मौति बिल्-हक़्क़** — और **मौत की बेहोशी** **हक़** ले कर आएगी — **ज़ालिक मा कुन्त मिन्हु तहीद** — **यही** है जिस से तुम **बचना** चाहते थे।'

बेटा, '**सक्रह**' — एक घुमराहट, एक छा जाना जो अक़्ल को धुँधला दे, जैसे बेहोशी। और ये क्या लाती है? **हक़।** सारा दिखावा ख़त्म। वो सारे नज़रिये जो एक शख़्स पालता रहा कि इस के बाद कुछ नहीं — **एक लम्हे में ग़ायब, यक़ीन से बदल गए।**

'ज़ालिक मा कुन्त मिन्हु तहीद' — ये ठीक वही चीज़ है जिसे तुम कतराते रहे। बेटा, हम इसे मुसलसल कतराते हैं: जब मौत की बात आए हम मौज़ू बदल देते हैं, हम क़ब्रिस्तान से बचते हैं, हम कहते हैं 'ऐसी बातें मत करो'। **और आयत कहती है: ये ठीक वही है जिस से तुम बच रहे थे, और ये रहा, और वक़्त पर आ गया।**

'व नुफ़िख़ फ़िस्-सूर — और सूर **फूँका** जाएगा — ज़ालिक यौमुल्-व'ईद — ये वादे की धमकी का दिन है।'

'**व जा-अत कुल्लु नफ़्सिम्-म'अहा साइक़ुंव्-व शहीद** — और हर नफ़्स **आएगा**, उस के **साथ** एक **हाँकने वाला** और एक **गवाह**।' बेटा, फिर दो फ़रिश्ते: एक तुम्हें जमा की तरफ़ आगे हाँकता हुआ, एक तुम्हारे बारे में गवाही देता

हुआ। **कोई अकेला नहीं पहुँचता, और कोई सबूत के बग़ैर नहीं पहुँचता।**

और फिर वो आयत जो हम सब को चौकन्ना कर दे: '**लक़द कुन्त फ़ी ग़फ़्लतिम्-मिन हाज़ा** — तुम **इस** से **ग़फ़लत** में थे — **फ़-कशफ़्ना 'अन्क ग़िता-अक** — तो हमने **तुम्हारा पर्दा हटा दिया** — **फ़-बसरुकल्-यौम हदीद** — तो **तुम्हारी निगाह, आज, तेज़ है।**'

बेटा, समझिए यहाँ क्या कहा जा रहा है। **मौत आख़िरत को पैदा नहीं करती।** वो हमेशा से वहाँ थी। मौत सिर्फ़ **पर्दा हटाती** है। और उस लम्हे इंसान की नज़र इतनी तेज़ हो जाती है कि वो सब कुछ देख लेता है जिसे वो ज़िंदगी भर नज़र-अंदाज़ करता रहा।

तो अमली बात ये है, बेटा: **वो पर्दा अभी हटा दीजिए, अपनी मर्ज़ी से** — क़ब्रिस्तान जा कर, मौत को याद कर के, हिसाब लगा कर। क्योंकि जो पर्दा आप आज ख़ुद हटा लेंगे, वो उस दिन आपके लिए सदमा नहीं बनेगा।

वो जो लौट आया

फिर सूरह उस शख़्स का बयान करती है जिसे आग में डाला जाएगा — 'हर ज़िद्दी मुनकिर, **मन्ना'इल्-लिल्-ख़ैर**, भलाई से **रोकने वाला**, हद से बढ़ने वाला, शक करने वाला।'

बेटा, ग़ौर कीजिए '**मन्ना'इल्-लिल्-ख़ैर**' — भलाई से रोकने वाला। वो जो न सिर्फ़ ख़ुद भलाई करने से चूकता है बल्कि **भलाई को होने से रोकता है।**

और फिर उसका साथी-शैतान बोलेगा: 'रब्बना मा अत्ग़ैतुहू व लाकिन कान फ़ी ज़लालिम्-ब'ईद — ऐ हमारे रब, **मैंने इसे सरकश नहीं बनाया**, बल्कि ये ख़ुद शदीद गुमराही में था।' बेटा, इसे याद रखिए: **उस दिन, जिसने तुम्हें गुनाह की सरगोशी की वो खड़ा हो कर तुमसे बेज़ारी कर देगा।** जिसने तुम्हें भटकाया कोई तुम्हारा फ़ाइल तुमसे न लेगा।

और फिर दूसरी तरफ़: '**व उज़्लिफ़तिल्-जन्नतु लिल्-मुत्तक़ीन ग़ैर ब'ईद** — और

जन्नत ख़ौफ़-ए-ख़ुदा वालों के **क़रीब** लाई जाएगी, **दूर नहीं** — हाज़ा मा तू'अदून लि-कुल्लि **अव्वाबिन हफ़ीज़** — ये वो है जिसका तुमसे वादा किया गया, हर **अव्वाब, हफ़ीज़** के लिए।'

बेटा, ये दो लफ़्ज़ सीख लीजिए। '**अव्वाब**' — वो जो **बार बार लौटता** है। **वो नहीं जो कभी न गिरा — वो जो बार बार वापस आता है।** हर बार जब वो फिसलता है, वो पलट आता है। और '**हफ़ीज़**' — वो जो **हिफ़ाज़त** करता है: जो अल्लाह की हुदूद की हिफ़ाज़त करता है, अपनी नमाज़ों की, अपनी ज़ुबान की, उस अमानत की जो उसे दी गई।

'**मन ख़शियर्-रह्मान बिल्-ग़ैबि व जा-अ बि-क़ल्बिम्-मुनीब** — जो **अर-रहमान** से **बिन-देखे डरा**, और एक **लौटने वाला दिल** ले कर आया।'

बेटा, उस आयत का मेल देखिए — 'ख़शियर्-**रहमान**', वो **अर-रहमान** से डरा, **निहायत मेहरबान** से। 'सज़ा देने वाले से डरा' नहीं। **मोमिन का ख़ौफ़ किसी ज़ालिम की दहशत नहीं; ये निहायत मेहरबान को नाराज़ करने का ख़ौफ़ है।** और वो 'क़ल्बिन मुनीब' — एक लौटने वाला दिल ले कर आता है। **यही वो सामान है जो आपको उस सफ़र के लिए चाहिए, बेटा: एक बेहतरीन रिकॉर्ड नहीं, बल्कि एक दिल जो लौटता रहा।**

'**लहुम मा यशा-ऊन फ़ीहा व लदैना मज़ीद** — उन के लिए वहाँ जो वो **चाहें** है, **और हमारे पास और भी ज़्यादा है।**'

बेटा, '**व लदैना मज़ीद**' — और हमारे पास **और** भी ज़्यादा है। हर ख़्वाहिश पूरी होने के बाद — **और भी।** उलमा ने कहा ये 'मज़ीद' ख़ुद **अल्लाह का दीदार** है, हर दूसरी लज़्ज़त से परे।

और सूरह का इख़्तितामी हुक्म, बेटा, नरम है: '**नह्नु अ'लमु बिमा यक़ूलून** — हम बेहतर जानते हैं जो वो कहते हैं — **व मा अन्त 'अलैहिम बि-जब्बार** — और तुम उन पर कोई **जब्बार**, मजबूर करने वाले नहीं हो — **फ़-ज़क्किर बिल्-क़ुरआनि मंय्-यख़ाफ़ु व'ईद** — **तो क़ुरआन से नसीहत करो** उस को जो मेरी

धमकी से **डरता** है।'

बेटा, ख़त्म करने के लिए क्या नोट है। मौत के मंज़र, फ़रिश्ते, दोज़ख़ और जन्नत के बाद, रसूल ﷺ के लिए आख़िरी हुक्म ये है: **तुम किसी को मजबूर नहीं कर सकते। बस नसीहत करो — और क़ुरआन से नसीहत करो।**

यही औज़ार है, बेटा। चीख़ कर नहीं, लोगों को कोनों में धकेल कर नहीं, उनकी हालत का मज़ाक़ उड़ा कर नहीं। **इस किताब से।** उन्हें पढ़ो, उनके सामने इसे जियो, और दिलों को उस ज़ात के सुपुर्द कर दो **जो उन से उनकी शह-रग से भी ज़्यादा क़रीब है।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. अल्लाह जानते हैं कि ज़मीन हर जिस्म में से क्या खाती है — दोबारा ज़िंदा होना सिर्फ़ उस के लिए 'दूर' है जो भूल गया **कौन** ये कर रहा है।

2. मुर्दा ज़मीन का सब्ज़ होना एक मौसम नहीं, एक रिहर्सल है: 'कज़ालिकल-ख़ुरूज'।

3. वो तुम्हारे नफ़्स की **सरगोशी** जानते हैं और तुम्हारी शह-रग से भी क़रीब हैं — गुनहगार के लिए कोई तन्हाई नहीं, तड़पने वाले के लिए कोई फ़ासला नहीं।

4. दो फ़रिश्ते तुम्हारे साथ **बैठे** हैं और एक लफ़्ज़ भी रिकॉर्ड से नहीं छूटता — ज़ुबान की हिफ़ाज़त वैसे करो जैसे अपने माल की।

5. मौत आख़िरत को पैदा नहीं करती; ये पर्दा हटाती है। **वो पर्दा अभी हटा दो, अपनी मर्ज़ी से।**

6. 'अव्वाब हफ़ीज़' बनो — वो जो बार बार लौटता और हिफ़ाज़त करता रहे — और एक लौटने वाले दिल के साथ पहुँचो।

7. तुम किसी को मजबूर नहीं कर सकते: क़ुरआन से नसीहत करो, और दिलों को उनके रब के सुपुर्द कर दो।

या अल्लाह, आप जो हमारी शह-रगों से भी क़रीब हैं — हमारी सरगोशियों को अच्छा,

हमारे रिकॉर्ड को हल्का, और हमारे दिलों को लौटने वाला बना दीजिए। आमीन।